राज्य अध्याय 20

1	**प्रार्थना करना**

समूह का अगुवा। अपनी आत्मा में होकर परमेश्वर की अगुवाई के लिए, उसकी उपस्थिति के प्रति संवेदनशील होने के लिए और उसकी आवाज़ को सुनने क लिए ***प्रार्थना*** करें। अपने समूह तथा परमेश्वर के राज्य के सुसमाचार प्रचार करने से सम्बन्धित इस अध्याय को परमेश्वर के हाथों में समर्पित करें।

2	**साझा करना** (20 मिनट) ***(शांत समय)*** **भजन संहिता 10,11,14 व 15**

अपनी बारी *आने* पर संक्षेप में ***साझा करें*** *(या* अपने नोट्स से *पढ़ें)* कि अपने दिये गये अनुच्छेद (भजन संहिता 23,24,25 व 27) से शान्त समय में क्या सीखा।

अगर कोई अपनी बात को साझा कर रहा है तो उसकी बातों को ध्यान से सुनें तथा लिखें। उसकी बातों पर चर्चा न करें।

3	**स्मरण करना** (5 मिनट) ***(मसीही कलीसिया)*** **(7) रोमियों 5:1–2अ**

दो–दो करके ***पुनरावलोकन*** करें।

(7) रोमियों 5:1–2अ। अतः जब हम विश्वास से धर्मी ठहरे, तो अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के साथ मेल रखें, जिसके द्वारा विश्वास के कारण उस अनुग्रह तक जिसमें हम बनें हैं।

4	**बाइबल अध्ययन** (85 मिनट) ***(रोमियों की पत्री)*** **रोमियों 5:12–21**

परिचय। एक साथ मिलकर रोमियों 5:12–21 का अध्ययन करने के लिए अध्ययन करने के पांच कदमों का इस्तेमाल करें।

रोमियों 5:1–11 में धर्मी ठहराये जाने की कुछ आशीषों के बारे में बताया गया है। रोमियों 5:12–21 मसीहियों के कानूनी अर्थात व्यवस्था के आधार पर अधिकार के बारे में बताया गया है खास तौर पर कि हर मसीही परमेश्वर की नज़रों में धर्मी है।

कदम 1. पढ़ें। **परमेश्वर का वचन**

पढ़ें। आइये एक साथ मिलकर रोमियों 5:12–21 तक पढ़ें।

आइये हम में से हर एक जन एक–एक वचन करके अनुच्छेद खत्म हो जाने तक पढ़ें।

कदम 2. खोजें। **अवलोकन**

ध्यान दें। इस अनुच्छेद में निहित कौन–सी सच्चाई आपके लिए महत्वपूर्ण है?

या इस अनुच्छेद के किस सत्य या प्रकाशन ने आपके मन या हृदय को छुआ?

लिखें। प्राप्त एक या दो प्रकाशनों को लिख लें। उस पर विचार विमर्श करें और अपने विचारों को अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें।

साझा करें। (जब समूह के सदस्य आपस में दो मिनट विचार या लिख लें, तो उसे लोगों के साथ ज़रूर साझा करें)

आईये हमें बारी बारी एक दूसरे को बताएँ कि हमने क्या सीखा है।

(याद रखें : हर एक छोटे समूह में, समूह के सभी सदस्य अलग बातों को साझा करेंगे)

5:12-19

खोज 1. **आदम और मसीह के बीच तुलना दर्शाती है कि परमेश्वर लोगों के साथ केवल उनके *व्यक्तित्व* (उनके कार्यों) के आधार पर ही व्यवहार नहीं करते, लेकिन साथ ही उनकी आदम में या फिर मसीह में एकता (उनके स्थान) के आधार पर भी करते हैं।**

"आदम के साथ एकजुट होने में हमारा गिरना" और "मसीह के साथ एकजुट होने में हमारा धर्मी ठहरना" के बीच एक महत्वपूर्ण समानता है। जो लोग यीशु मसीह में विश्वास करते हैं उनका धर्मी ठहरना, उन लोगों के गिरने के द्वारा *चित्रित* किया गया है जो आदम के वंशज हैं। जिस प्रकार से "पाप, दोष और मृत्यु" को, जिसमें समस्त मानवजाति शामिल है, कभी भी शुद्ध रूप से व्यक्तिवादी शब्दों में नहीं समझाया जा सकता, लेकिन केवल आदम के साथ एकजुट (अर्थात, उनके शारीरिक वंश से) होने के द्वारा ही समझाया जा सकता है, उसी प्रकार, "धार्मिकता, न्याय और जीवन", जिसमें सभी मसीही शामिल हैं, कभी भी शुद्ध रूप से व्यक्तिवादी शर्तों (विश्वास के प्रयास) द्वारा प्राप्त नहीं हो सकता, लेकिन केवल यीशु मसीह के साथ एकजुट (अर्थात, मसीह में उनका स्थान) होने के द्वारा!

(1) वचन 12 तुलना के केवल पहले भाग की व्याख्या करता है,
"जिस प्रकार लोग आदम में मरे हुए हैं,
(उसी प्रकार मसीह में धर्मी ठहराए गए है)"।

जिस प्रकार आदम के पाप (उसकी अनाज्ञाकारिता) ने उन सभी लोगों के लिए दोष और मृत्यु के निश्चित परिणाम को निर्धारित किया जो सभी लोग आदम के वंशज थे, तो मसीह की धार्मिकता (उनकी आज्ञाकारिता) ने उन सभी लोगों के लिए जो समीह में विश्वास करते हैं, धर्मी ठहरने और जीवन के अनिर्वाय परिणामों को संचालित किया (रोमियों 5:18-19)!

(2) वचन 13-14 यह बताता है कि आदम का एक अपराध समस्त मानव जाति के पतन का कारण था।

यह पहला कोष्ठक है (अंतराल, व्याकरणिक रूप से पिछले वाक्य से नहीं जुड़ा)। यह तथ्य, कि लोग मूसा की व्यवस्था के दिए जाने (1446 ईसा पूर्व) से बहुत पहले ही मर चुके थे, यह सिद्ध करता है कि पतन का कारण लोगों के व्यक्तिगत पाप नहीं थे, बल्कि आदम का एक अपराध था। इसलिए आदम पृथ्वी पर सभी स्वभाविक रूप से उत्पन्न हुए मनुष्यों का प्रतिनिधि या मुखिया है। जब आदम पाप में गिरा, समस्त मानव जाति पाप में गिर गई!

आदम यीशु मसीह का *एक उदाहरण (चित्र या प्रकार)* था, वह जो आने वाला था। इसी तरह, यीशु मसीह पृथ्वी पर आत्मिक रूप से नया जन्म् पाए हुए लोगों (जो यीशु मसीह में विश्वास करते हैं) के *प्रतिनिधि या मुखिया* हैं (यूहन्ना 1:12-13)। आदम और मसीह परमेश्वर के छुटकारे के प्रकाशन के

दो ऐतेहासिक चित्र हैंः आदम ने छुटकारे को आवश्यक बनाया और मसीह ने छुटकारे को वास्तविकता बनाया।

(3) वचन 15–17 बताते हैं कि पतन और उद्धार के बीच समानता पूर्ण रूप से समानांतर नहीं है।

यह दूसरा कोष्ठक है। यह बताता है कि एक तरफ पाप में गिरना और दूसरी तरफ पाप से उद्धार के बीच समानता पूर्ण रूप से समानांतर नहीं है। मसीह का अनुग्रह पूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की अपेक्षा विस्तार और परिणाम में कहीं अधिक बड़ा है।

(4) वचन 18–19 सम्पूर्ण तुलना की व्याख्या करते हैं,
"जिस प्रकार आदम से जुड़े सभी लोग मरते हैं,
उसी प्रकार सभी लोग जो मसीह से जुड़े हैं धर्मी, ठहरते हैं"।

जिस प्रकार आदम के अपराध (उसके पाप में गिरने) के कारण उसके सभी स्वभाविक वंशज (इतिहास में सभी मनुष्य प्राणी) दोषी ठहरे, तो मसीह की धार्मिकता (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) मसीह में सभी विश्वासियों के धर्मी ठहरने का कारण बनी (अर्थात, वे सभी लोग जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह का प्रचूर प्रयोजन और धार्मिकता का वरदान प्राप्त किया (रोमियों 5:17)। जिस प्रकार आदम की अवज्ञा कारण बनी की परमेश्वर सभी स्वभाविक मनुष्यों को पापी घोषित करे, उन्हें पापी समझे और उनके साथ व्यवहार करे, तो मसीह की आज्ञाकारिता कारण बनी की परमेश्वर मसीह में सभी विश्वासियों को पूर्ण रूप से धर्मी घोषित करें, धर्मी माने और धर्मी के समान उनके साथ व्यवहार करें।

5:20–21

खोज 2. **मनुष्यों के पाप और परमेश्वर के अनुग्रह के बीच तुलना का सांराश।**

(1) व्यवस्था को एक अपराध में जोड़ा गया था जिससे कि पाप बढ़े।

"व्यवस्था बीच में आ गई की अपराध बहुत हो" (रोमियों 5:20)। "व्यवस्था" को आदम और मसीह के बीच के समय (1446 ईसा पूर्व) में अनुग्रह की वाचा में जोड़ा गया (गलातियों 3:17,19)। यहाँ "व्यवस्था" का तात्पर्य मूसा की सम्पूर्ण व्यवस्था, पुराने नियम की सम्पूर्ण संगठित प्रणाली से है। मसीह के प्रथम आगमन से पहले और इससे पहले कि मसीह में विश्वास एक वास्तविकता बनता, "सम्पूर्ण सांसर पाप का कैदी था।" यहाँ तक कि पुराने नियम के समय के विश्वासी भी व्यवस्था द्वारा कैदी थे, तब तक बंधे हुए थे जब तक कि यीशु मसीह में विश्वास प्रगट नहीं हुआ। व्यवस्था को काम में लाया गया कि यह लोगों की अगुवाई मसीह की ओर करे और लोग विश्वास के द्वारा धर्मी ठहराए जांए" (गलातियों 3:22–24)। व्यवस्था को अनंत जीवन प्राप्त करने का माध्यम के रूप में बीच में नहीं लाया गया, बल्कि पाप और मृत्यु की अधिकता और उद्धारकर्ता द्वारा उद्धार की आवश्यकता का एहसार दिलाने वाले माध्यम के रूप में बीच में लाया गया। जितना अधिक मनुष्य को व्यवस्था का ज्ञान था, उतनी ही बड़ी उसकी जिम्मेदारी थी, क्योंकि जहाँ व्यवस्था है, वहाँ अपराध भी है (रोमियों 4:5)। जितना अधिक व्यवस्था ने मनुष्य के दिमाग और हृदय में काम किया, उतना अधिक मनुष्य का विरोध परमेश्वर के प्रति बढ़ा और उतना ही अधिक यह परमेश्वर की धार्मिक

आज्ञाँओं को भ्रष्ट करने का कारण बना (रोमियों 7:8,11,13)। इसप्रकार, आदम और मसीह के बीच के समय में व्यवस्था का योगदान केवल अपराधों और पापों को बढ़ाना था!

(2) मनुष्य के पाप बढ़ने से परमेश्वर का अनुग्रह उससे भी अधिक बढ़ जाता है।

परमेश्वर की योजना अच्छाई को बुराई से बाहर निकालने की थी। उनकी योजना मनुष्य के पापों को बहुतायत से अनुमति देना था (क्योंकि उन्होंने व्यवस्था को बनाए नहीं रखा, और व्यवस्था को बनाए नहीं रख सकते थे), ताकि उनका अनुग्रह अत्यधिक बहुतायत से हो! "जब पाप बहुत हुआ, तब परमेश्वर का अनुग्रह उससे भी अधिक हुआ"। संसार के सभी पाप परमेश्वर के अनुग्रह से सबसे अद्भुत प्रदर्शन को दिखाने के लिए अवसर बने! पाप के बजाय अनुग्रह ने यीशु मसीह की धार्मिकता के द्वारा शासन करना शुरू कर दिया, (अर्थात, उस धार्मिकता के द्वारा जिसे यीशु मसीह ने अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा पूर्ण किया और उसके पश्चयात अपनी आत्मा के द्वारा विश्वासियों के जीवन पर उसे लागू किया)!

हालाँकि व्यवस्था अभी भी लोगों द्वारा की जाने वाली बुराई को बहुगुणित करने के लिए एक बहुत प्रभावशाली माध्यम है (रोमियों 7:7-8), परमेश्वर का अनुग्रह धार्मिकता और नया जन्म् दोनों को उत्पन्न करने के लिए (व्यवस्था की तुलना में) कहीं अधिक प्रभावशाली माध्यम बना! यद्यपि अभी भी संसार पर बुराई का प्रभाव बहुत अधिक है, अपने पूर्ण अर्थों में मृत्यु शब्द का कारण है (आत्मिक मृत्यु, शारीरिक मृत्यु और अनंत मृत्यु), संसार पर परमेश्वर की धार्मिकता का प्रभाव उससे कहीं अधिक है और अपने पूर्ण अर्थ में जीवन शब्द का करण है (फिर से जन्म् पाया हुआ नया जीवन जो अब एक परिपूर्ण और सिद्ध अंनत जीवन में बढ़ता है)।

परमेश्वर के अनुग्रह के लाभकारी प्रभाव पाप के बुरे प्रभाव से बढ़ कर है। परमेश्वर का अनुग्रह इस संसार में पाप से उत्पन्न होने वाली बुराई से कहीं अधिक भलाई उत्पन्न करता है। लोगों की बढ़ती हुई संख्या उद्धार पाती है और अनुग्रह के द्वारा बदले जाते हैं। आदम के पाप में गिरने के कारण बुराई का प्रभाव उस भलाई के प्रभाव की तुलना में बहुत हल्का जो यीशु मसीह के प्रथम आगमन के द्वारा लाया गया!

कदम 3. प्रश्न। **व्याख्या**

ध्यान दें। आप इस समूह से इस अनुच्छेद के आधर पर कौन सा प्रश्न पूछ सकते हैं?

आईये रोमियों 2:1-16 में पायी जाने वाली सच्चाईयों को समझने का प्रयास करें और उन बातों के बारे में प्रश्न पूछें जो हम अभी तक नहीं समझते।

लिखें: अपने प्रश्नों को जितना सम्भव हो स्पष्ट रूप दें। फिर उसे अपनी नोटबुक में लिखें।

साझा करें: (समूह के सभी लोग जब दो मिनट सोच विचार करके लिख चुके हों तो, होनें दे कि पहले हर सदस्य अपना प्रश्न साझा करें।)

चर्चा करें। (उसके पश्चात अपने समूह में एक साथ मिलकर कुछ प्रश्नों को चुनकर उन पर चर्चा करें।)

(नीचे विद्यार्थियों द्वारा पूछे जाने वाले प्रश्नों पर चर्चा करने पर प्राप्त विचारों के नोट्स के उदाहरण दिय गये हैं।)

5:14

प्रश्न 1. **पौलुस के कहने का क्या अर्थ है जब वह कहता है कि आदम आने वाले यीशु मसीह का एक उदाहराण (नमूना, प्रकार) था?**

ध्यान दें। प्रेरित पौलुस सिखाता है कि संसार का हर एक व्यक्ति आदम और मसीह दोनों के साथ एक निश्चित रिश्ते में खड़ा होता है। आदम के एक अपराध के कारण, संसार के सभी लोग परमेश्वर की दृष्टि में भ्रष्ट थे। और मसीह के एक धार्मिक कार्य (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) के द्वारा, मसीह में सभी विश्वासी परमेश्वर की दृष्टि में धर्मी ठहराए गए हैं।

रोमियों 5:12 की व्याख्या लोगों द्वारा मुख्य रूप से अलग अलग प्रकार से की गई है क्योंकि लोगों का अपने पूवर्जों के कामों और उनके वंशजों पर इसके परिणामों के बीच संबंध के विषय में अलग अलग दृष्टि कोण है।

(1) आधुनिक युग का प्रचलन व्यक्तिवाद पर जोर देता है।

व्यक्तिवाद के इस वर्तमान युग में, लोग इस विचार को अस्वीकार कर देते हैं की उनके पुवार्जो के पापों और उनके वंशज होने के नाते उनके लिए इसके परिणामों के बीच संबंध है। वे मानते हैं कि प्रत्येक व्यक्ति केवल अपने बुरे कार्यों के लिए जिम्मेदाम है और इसके परिणामस्वरूप *केवल* अपने ही पापों[1] के कारण दुःख उठाता है।

वे रोमियों 5:12 की व्यख्या इस प्रकार करते हैंः पहला व्यक्ति जिसने व्यक्तिगत पाप किया वह आदम था। इसलिए पहला व्यक्ति जो दुःख उठाने और मृत्यु के योग्य था वह केवल आदम था। पाप और मृत्यु ने मानव इतिहास में पहली बार आदम के द्वारा प्रवेश किया। उसके सभी वंशजों ने *केवल उसके बुरे उदाहरण का अनुसरण किया!* उन्होंने भी व्यक्तिगत पाप किया और इसके परिणामस्वरूप मर गए। केवल इस प्रकार से ही आदम का बुरा उदाहरण लोगों के पाप में गिरने का कारण बना। मृत्यु सब मनुष्यों में आ गई क्योंकि सब ने आदम के बुरे उदाहरण का अनुसरण किया और व्यक्तिगत रूप से पाप किया।

(2) बाइबल दोनों ही सिखती है, एक दूसरे के साथ हमारी एकजुट्ता साथ ही साथ हमारी व्यक्तिगत जिम्मेदारी।

हमारे पूवर्जो के पापों और उनके वंशजों के रूप में हमारे लिए इसके परिणामों के बीच एक संबंध है। बाइबल सिखाती है कि प्रत्येक व्यक्ति अपने बुरे कामों (पापों) और इसके परिणामों के लिए जिम्मेदार है, न केवल स्वंय के लिए, बल्कि अपने वंशजों के लिए भी! बाइबल कई उदाहरण देती हैः

भविष्यद्वक्ता यहेजकेल और यिर्मयाह। बेबीलोन में बंधुवाई में रह रहे इस्त्राएलियों ने अपने वर्तमान दुःखों के लिए अपने पुर्वजों के पापों को दोषी ठहराया। उन्होंने कहा, ''खट्टे अंगूर तो खाए पुरखा लोगों ने, परन्तु दाँत खट्टे हुए बच्चों के'' (यहेजकेल 18:2)। भविष्यद्वक्ता यहेजकेल ने अपने पापों और उनके परिणामों के प्रति प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी पर जोर दिया। ''जो कोई प्राणी पाप करे वही मर जाएगा'' (यहेजकेल 18:4)। प्रत्येक पापी अपने स्वयं के पापों के लिए मर जाएगा। साथ ही प्रेरिता पौलुस ने भी यही सिखायाः ''परमेश्वर हर एक को उसके कर्मों के अनुसार बदला देगा'' (रोमियों 2:6)!

---

[1] हिंदू धर्म का मानना है कि एक व्यक्ति के व्यक्तिगत कर्म (किसी के अच्छे और बुरे कार्यो के बीच संतुलन का प्रभाव) निर्धारित करते हैं कि वह पुर्नजन्म के चक्र में ऊपर होगा या नीचे। यहूदी और मुसलमान विश्वास करते हैं कि एक व्यक्ति के भले और बुरे कामों के बीच का संतुलन अंतिम न्याय के दिन मापदंड पर यह निर्धारित करता है कि वह व्यक्ति जन्नत में जाएगा या फिर नरक में डाला जाएगा। मानववादी और व्यवस्थावादी मानते हैं कि उनके भले और बुरे कामों के बीच संतुलन उनके भविष्य को निर्धारित करता है।

इस्त्राएलियों ने अपनी बेगुनाही बनाए रखीः ''यहोवा ने हमारे विरूद्ध इतनी बड़ी विपत्ति क्यों डाली है? हमारा अधर्म क्या है? हमने अपने परमेश्वर यहोवा के विरूद्ध कौन सा पाप किया है?'' तो तू इन लोगों से कहना,

- एकजुटताः ''यहोवा की यह वाणी है, क्योंकि तुम्हारे पुरखा मुझे त्यागकर दूसरे देवताओं के पीछे चले, और उनकी उपासना करके उनको दंडवत किया, और मुझे त्याग दिया और मेरी व्यवस्था का पालन नहीं किया (यह उनके पुर्वजों के पापों के साथ उनकी एकजुटता को संदर्भित करता है)
- व्यक्तिगतः ''लेकिन जितनी बुराई तुम्हारे पुरखाओं ने की थी, उससे भी अधिक तुम (व्यक्तिगत रूप से) करते हो। क्योंकि तुम अपने बुरे मन के हठ पर चलते हो और मेरी नहीं सुनते।

इस कारण, मैं तुम को इस देश से उखाड़कर ऐसे देश में फेंक दूगाँ, जिसको न तो तुम जानते हो और न तुम्हारे पुरखा जानते थे; और तुम रात दिन दूसरे देवताओं की उपसना करते रहोगे (यिर्मयाह 16:10-13)।'' भविष्यद्वक्ता यिर्मयाह ने व्यक्तिगत पापों के लिए व्यक्तिगत जिम्मेदारी और पुर्वजों के पापों के साथ एकजुटता, दोनों पर जोर दिया।

इसलिए परमेश्वर ने इस्त्राएलियों को उनके पापों के लिए व्यक्तिगत और एक राष्ट्र (एकजुटता) के रूप में दंडित किया और उन्हें व्यक्तिगत रूप से और एक राष्ट्र के रूप में बेबीलोन की बंधुवाई में भेज दिया।

निर्गमन 20 में दस आज्ञाएँ मानव जाति में प्रत्येक व्यक्ति की अन्य लोगों के साथ एकजुटता पर जोर देती हैं।

आशीषों में एकजुटताः एक ओर, दस आज्ञाएँ लोगों को परमेश्वर की आज्ञाओं के प्रति व्यक्तिगत आज्ञाकारिता के लिए प्रोत्साहित करती हैं, क्योंकि परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करने का उनके वंशजों पर सकारात्मक प्रभाव होता है। निर्गमन 20:6 में परमेश्वर प्रतिज्ञा करते हैं, ''जो मेरी आज्ञाओं को मानते हैं, मैं उनकी हजारों पीढ़ी पर दया करता हूँ।''

श्रापों में एकजुटताः लेकिन निर्गमन 20:5 में वे चेतावनी भी देते हैं कि ''जो मुझ से बैर रखते हैं, उनके बेटों, पोतों और परपोतों को भी पितरों का दंड दिया करता हूँ।'' हम हर दिन पूर्वजों के प्रभावों को उनके बच्चों में देख सकते हैं उन देशों में जहाँ लोग भूमि के नियमों, नशीले पदार्थों के दुरूपयोग, अवैध यौन संबंध, अपराध, जातिवाद, घृणा और धार्मिक अतिवाद जैसे नियामों के प्रति आज्ञाकारी नहीं हैं।

इसलिए हमारे और हमारे बच्चों और हमारे बच्चों के बच्चों के बीच एकजुटता है। बाइबल केवल प्रत्येक व्यक्ति की व्यक्तिगत जिम्मेदारी के बारे में ही नहीं सिखाती, लेकिन प्रत्येक व्यक्ति की अपने परिवार, धार्मिक समूह, अपने देश, अपने राष्ट्र और यहाँ तक की समस्त संसार की मानवता के साथ एकजुटता के बारे में भी सिखती है। जो कुछ भी दूसरों लोगों के साथ होता है वह निश्चित रूप से मुझ पर भी प्रभाव डालता है! जो कुछ मेरे साथ होता है वह निश्चित रूप से दूसरे लोगों को प्रभावित करता है!

रोमियों 5:12-19 में, प्रेरित पौलुस भी सभी मनुष्यों की अपने पूर्वज (आदम) के साथ (प्राकृतिक) एकजुटता और सभी मसीहियों की उनके उद्धारकर्ता (मसीह) के साथ (आत्मिक) एकजुटता पर जोर देता है! वह सिखाता है कि जो कुछ भी आदम के साथ हुआ उसने सम्पूर्ण मानव जाति पर प्रभाव डाला। और वह यह भी सिखता है कि जो कुछ भी मसीह से साथ हुआ वह उन सब लोगों पर प्रभाव डालता है जो यीशु मसीह के हैं। इसलिए पौलुस आदम को मसीह का ''एक उदाहरण (नमूना, प्रकार)'' कहता है। आदम के व्यक्तिगत अपराध (पाप) और उसके अनाज्ञाकारिता के परिणाम (मृत्यु शब्द अपने पूर्ण अर्थ में) का सभी मनुष्यों पर प्रभाव है जो स्वभाविक रूप से पैदा हुए हैं। इसी तरह, यीशु मसीह के द्वारा पूर्ण किए गए उद्धार के कार्य और उनकी आज्ञाकारिता के परिणाम (अंनत जीवन शब्द अपने पूर्ण अथ में) का उस प्रत्येक व्यक्ति पर प्रभाव है जिसका नया जन्म् हुआ है (यीशु मसीह में विश्वासी) (यूहन्ना 1:12-13)। आदम के व्यक्तिगत पाप ने प्रत्येक व्यक्ति को (आत्मिक, शारीरिक और अनंत) मृत्यु तक पहुँचा दिया। इसी तरह, ''अनुग्रह के असीम प्रयोजन की स्वीकृति और धार्मिकता का वरदान'' (मसीह की आज्ञाकारिता द्वारा प्राप्त की गई) हर उस व्यक्ति को अनंत जीवन में राज्य करने की ओर ले जाता है जो यीशु मसीह पर विश्वास करता है।

रोमियों 5:12-19 में, पौलुस आदम के व्यक्तिगत पाप और मृत्यु की तुलना उन लोगों के पाप और मृत्यु से नहीं करता जो उसके बाद हुए। बल्कि वह आदम के द्वारा संसार के सभी लोगों में लाए गए पाप और मृत्यु की तुलना, यीशु मसीह द्वारा संसार में सभी मसीहियों के लिए लायी गई धार्मिकता और जीवन से करता है! मसीह के साथ एक विश्वासी की एकजुट्ता की तुलना स्वभाविक व्यक्ति की आदम के साथ एकजुट्ता से की गई है।

वचन 19 में वह कहता है कि एक मनुष्य, आदम, के आज्ञा न मानने से बहुत लोग पापी *ठहरे*/ ''ठहरे'' शब्द (यूनानीः कथिस्टमी) का अर्थ है ''कानूनी रूप से गठित होना''। आदम के अनाज्ञाकारिता के एक काम ने मानव जाति के प्रत्येक व्यक्ति को कानूनी रूप से *दोषी, एक पापी* ठहरा दिया! ''एक पापी'' का अर्थ होता है एक ऐसा व्यक्ति जो परमेश्वर के साथ, दूसरे लोगों के साथ और स्वयं के साथ एक सही संबंध स्थापित करने में चूक गया, क्योंकि वह अभी भी यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता (यूहन्ना 16:9)। ''एक पापी'' आर्थात वह व्यक्ति जो परमेश्वर एक साथ व्यक्तिगत संबंध में चूक गया, जो अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य से चूक गया, जिसके जीवन में परमेश्वर के पवित्र चरित्रगुणों का अभाव है, क्योंकि वह अभी तक वह नहीं बना जो परमेश्वर चाहते हैं कि लोग बनें। बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य जाति का एक भी व्यक्ति पवित्र और धर्मी नहीं है! परमेश्वर सम्पूर्ण मानव जाति के प्रत्येक व्यक्ति को उनकी स्वभाविक स्थिति में आदम के अपराध के अनुसार ''एक पापी'' *समझते हैं, घोषित करते हैं, और व्यवहार करते हैं।*

वचन 19 में, पौलुस यह भी कहता है कि एक मनुष्य, मसीह, के आज्ञामानने से ''बहुत से ठर्मी ठहरते (यूनानीः कथिस्टमी) हैं।'' मसीह के आज्ञकारिता के एक काम ने (यूहन्ना 10:11) बहुतों को (मसीह में सभी विश्वासी, अर्थात, ''वे सब जिन्होंने परमेश्वर के अनुग्रह के असीम प्रयोजन और धार्मिकता के वरदान को स्वीकार किया'') (रोमियों 5:17-18) कानूनी रूप से *क्षमा किए हुओं और धर्मी ठहराए* हुओं की स्थिति में संगठित किया। बाइबल के परमेश्वर की दृष्टि में सभी (नया जन्म् पाए हुए) मसीही धर्मी हैं! परमेश्वर यीशु मसीह के आज्ञाकारिता के एक काम (उनकी मृत्यु और पुनरूत्थान) के आधार पर यीशु मसीह में प्रत्येक विश्वासी को ''एक धर्मी व्यक्ति'' *घोषित करते, मानते और व्यवहार करते हैं।*

पौलुस सिखाता है कि जिस प्रकार सभी लोग स्वभाविक रूप से अपने प्रतिनिधि आदम के साथ एकजुटता में पापी है, और परिणाम स्वरूप आदम के साथ एकजुटता में मृत्यु के लिए अभिशप्त हैं, उसी प्रकार यीशु मसीह में सभी विश्वासी अपने प्रतिनिधि, यीशु मसीह के साथ एकजुटता में मारे गए और मुर्दों में से जी उठे। यीशु मसीह द्वारा प्राप्त की गई धार्मिकता उन में अध्यारोपित की गई है (2कुरिन्थियों 5:21)।

बेशक, सभी स्वभाविक मनुष्यों ने आदम के माध्यम से शाब्दिक रूप से पाप नहीं किया और मसीह में सभी विश्वासी शाब्दिक रूप से मसीह के साथ नहीं मरे। लेकिन आदम का एक पाप न्यायिक और वास्तविक अर्थ में सभी स्वभाविक लोगों के लिए उनके पाप के लिए उत्तरदायी (कारण) ठहरा। इसी प्रकार यीशु मसीह की मृत्यु और पुनरूत्थान न्यायिक और वास्तविक अर्थ में मसीह में सभी विश्वासियों के लिए उनके पुराने जीवन की मृत्यु और नए जीवन के पुनरूत्थान के लिए उत्तरदायी (कारण) ठहरा।

मसीहियों को ''एकजुटता'' को कैसे देखना चाहिए? ''एकजुटता'' केवल आदम के *पापी उदाहरण* का अनुसरण करने से कहीं अधिक है।

भजन 51:5 में, दाऊद कहता है कि वह पापमय स्वभाव के साथ पैदा हुआ है। और अय्यूब 14:4 में, अय्यूब कहता है कि कोई अशुद्ध वस्तु में से शुद्ध वस्तु नहीं निकाल सकता। केवल आदम का पापमय उदाहरण ही नहीं, लेकिन आदम का पापमय स्वभाव भी मनुष्य जाति में उसके वंशजों तक पहुँचा। आदम के पापमय कार्य ने सभी स्वभाविक लोगों को दोषी ठहराया।

और रोमियों 5:12-19 में, पौलुस कहता है कि केवल आदम का पापमय स्वभाव ही नहीं, बल्कि आदम की पापमय स्थिति (कानूनी स्थिति) भी मानव जाति में उसके वंशजों तक पहुँची।

इस प्रकार, इतिहास में सभी मनुष्यों ने न केवल आदम के पापमय उदाहरण का अनुसरण किया, बल्कि साथ ही आदम के पापमय कार्य, पापमय स्थिति और पापमय स्वभाव का भी अनुसरण किया!

5:15-17

प्रश्न 2. **आदम के कार्य से मसीह का कार्य किस प्रकार बड़ा है?**

ध्यान दें। रोमियों 5:15-17 बताता है कि ''पाप में गिरना'' और ''पाप से उद्धार'' के बीच की समानता पूर्णरूप से समानांतर नहीं है। मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य से विस्तार (विषयवस्तु पर दृष्टिकोण) और निर्देश में कहीं बड़ा है।

(1) मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की तुलना में कहीं अधिक बड़ा है।

मसीही बचाए गए हैः

- आदम के एक अपराध (मूल पाप) के परिणामों से (मृत्यु अपने पूर्ण अर्थ में)
- हमारे स्वयं के असंख्य व्यक्तिगत पापों के परिणाम से
- अन्य लोगों के असंख्य अपराधों के परिणाम से

परिणाम हैः दोष और निंदा, शर्म और अस्वीकृति, अशुद्धता और बीमारियाँ, हार और अनन्त दंड (नरकदंड)!

एक मनुष्य (आदम) के एक अपराध को (और अन्य अपराधों को नहीं) उसके सभी वंशजों के लिए भी माना गया, ताकि उसके स्वभाविक वंशज (सभी लोगों) ''अधर्मी'' घोषित हो जाएं। उसकी अधार्मिकता से मनुष्यों के लिए कुछ भी भालाई उत्पन्न नहीं हुई। अपने न्याय को प्रगट करने के लिए, परमेश्वर ने अपनी सहनशीलता के कारण यीशु मसीह के प्रथम आगमन से पहले किए गए सभी पापों को बिना दंड़ित किए छोड़ दिया'' (रोमियों 3:25-26)।

लेकिन सभी विश्वासियों के सभी अपराध (बिना अपवाद के) उनके एक प्रतिनिधि (मसीह) पर डाल (अध्यारोपित) दिए गए हैं (1पतरस 2:24), ताकि उसके सभी आत्मिक वंशज (मसीही लोग) ''धर्मी'' घोषित कर दिए जाएं! उसकी धार्मिकता ने मसीह में अनगिनत विश्वासियों के लिए असंख्य भलाईयों (फायदा, लाभ) को उत्पन्न किया।
इसलिए, परमेश्वर के अनुग्रहपूर्ण उद्धार के कार्य का दायरा, आदम के विनाशकारी कार्य के दायरे कहीं अधिक बड़ा है!

(2) मसीह का अनुग्रहपूर्ण कार्य आदम के विनाशकारी कार्य की तुलना में कहीं अधिक सकारात्म है (रोमियों 5:17)।

आदम के अपराध ने सभी को और सभी चीजों को नकारात्मक दिशा में ले जाने के लिए प्रेरित किया, ''धार्मिक निंदा'' के लिए और ''मृत्यु'' अपने पूर्ण अर्थ में। लेकिन मसीह की धार्मिकता हर चीज को सकारात्मक दिशा में ले जाने का कारण बनती है, ''पूर्णरूप से धर्मी ठहरना'' और ''जीवन'' अपने पूर्ण अर्थ में। इससे सिद्ध होता है कि परमेश्वर न्याय की अपेक्षा अनुग्रह प्रदान करने से अधिक प्रसन्न होते हैं (यहेजकेल 18:23; 33:11; रोमियों 5:15,20)। पौलुस न्याय के नकारात्मक संचालन को पहचानता है। न्याय निष्ठुर ढ़ग से कार्य करता है, ताकि बहुत से मारे जाएं (आत्मिक, शारीरिक और अनन्त रूप से)!

लेकिन पौलुस अनुग्रह के सकारात्मक संचालन को भी पहचानता है। अनुग्रह न सिर्फ न्याय और मृत्यु के नकारात्मक संचालन को रोकता है, बल्कि इसके विपरीत, धर्मी ठहरने और जीवन के लिए भी पर्याप्त है! मसीह के द्वारा पूर्ण किया गया उद्धार का कार्य परमेश्वर की दृष्टि में मनुष्य की कानूनी स्थिति को ''निश्चित नकारात्मक से सामान्य'' (शून्य-रेखा) में पुर्नस्थापित ही नहीं करता, बल्कि ''निश्चित नकारात्मक से निश्चित सकारात्मक भी करता है''! पाप ने दोष के द्वारा मृत्यु तक राज्य किया, लेकिन अनुग्रह ने धार्मिकता के द्वारा जीवन तक राज्य किया (रोमियों 5:21)! परमेश्वर के न्याय के बहुत बड़े परिणाम हैं, लेकिन परमेश्वर के अनुग्रह की उपलब्धियां कहीं अधिक हैं! मसीही केवल मृत्यु और अर्थहीनता से ही नहीं बचाए गए हैं, बल्कि अनन्त जीवन प्राप्त करने के लिए बचाए गए हैं, जिसमें एक अर्थपूर्ण अनन्त जीवन और नई पृथ्वी पर नियत कार्य शामिल हैं!

''दया न्याय पर जयवंत हाती है'' (याकूब 2:13)!

5:18

प्रश्न 3. **क्या बाइबल सिखाती है कि संसार के सभी लोग बच जाएँगे?**

ध्यान दें। यदि वचन 18 को संदर्भ से बाहर कर दिया जाए, *तोऐसा लगता है* कि यह सार्वभौमिक उद्धार सिखाता हैः ''इसलिए जैसा एक अपराध सब मनुष्यों के लिए दंड की आज्ञा का कारण हुआ, वैसा ही एक धर्म का काम भी सब मनुष्यों के लिये जीवन के निमित्त धर्मी ठहराए जाने का कारण हुआ।''

बाइबल में ''सभी मनुष्यों'' शब्द का अर्थ हमेशा ''प्रत्येक व्यक्ति जो कभी पृथ्वी पर बिना अपवाद के रहा'' से नहीं है।

(1) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'', आशीषों से जुड़ी आवश्यकशर्त के द्वारा सीमित होना चाहिए।

रोमियों 5:17 कहता है कि धर्मी ठहरने की शर्त ''परमेश्वर के अनुग्रह के असीम प्रयोजन और धार्मिकता के उपहार को स्वीकार करना है।'' इसी प्रकार, बाकि बाइबल सिखाती है कि वे लोग जो ''यीशु मसीह को स्वीकार करते हैं (उस पर विश्वास करते हैं) केवल वे ही उद्धार पाएंगे (यूहन्ना 1:12-13; 3:16-18,36)। इस प्रकार, बाइबल सार्वभौमिक उद्धार नहीं सिखती। उद्धार प्राप्त करने के लिए शर्त यीशु मसीह पर विश्वास करना है (खाली हाथों से मसीह को स्वीकार करना)।

(2) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'', विषय या प्रसंग की प्रकृति के द्वारा सीमित होना चाहिए।

उदाहरण के लिए, मरकुस 1:37, 5:20, और 11:32 में, ''सभी लोग'' शब्द को संदर्भ में वर्णित लोगों को तक सीमित होना चाहिए, क्योंकि ''पृथ्वी पर प्रत्येक व्यक्ति यीशु को नहीं खोज रहा''। ''पृथ्वी पर सभी मनुष्य इस बात से हैरान नहीं थे कि यीशु ने उनके लिया क्या किया।'' और ''पृथ्वी पर हर कोई यह नहीं जानता था कि यूहन्ना बपतिस्मादात एक भविष्यद्वक्ता था''।

इसी प्रकार, रोमियों 5:18 में, ''सब मनुष्यों के लिए दंड की आज्ञा'' इन शब्द को उन लोगों तक सीमित होना चाहिए जो सामान्य पीढ़ी के द्वारा आदम के वंशज थे, क्योंकि मसीह स्वंय अपवाद है। और इसी प्रकार, ''धर्मी ठहरना जो सभी लोगों के लिए जीवन को लाता है'' ये शब्द उन लोगों तक सीमित होने चाहिए जो विश्वास के द्वारा मसीह से जुड़े हैं (1कुरिन्थियों 15:22-23)। पौलुस संख्याओं के बारे में नहीं सोचता है, परन्तु परमेश्वर की योजना के सचांलन के तरीके बे बारे में! परमेश्वर आदम से जुड़े सभी लोगों को दोषी ठहराते हैं, लेकिन मसीह से जुड़े सभी लोगों को धर्मी ठहराते हैं।

(3) सार्वभौमिक शब्द ''सभी'' का प्रायोग सामन्य रूप से यहूदियों में पापयमय रवैये की विशिष्टता का मुकाबला करने के लिए किया गया, जब वे कहते हैं कि यहूदी अन्यजातियों (गैर-यहूदियों) से बेहतर हैं।

पौलुस इस बात पर जोर देता है कि यहूदी और अन्यजातियों में अनिवार्य रूप से कोई अतंर नहीं है।

- ''सभी लोग'' जिन्होंने उद्धार पाया है, एक ही तरीके से उद्धार पाया है, इससे कोई फर्क नहीं पड़ता की मूल रूप से वे यहूदी हैं या गैर-यहूदी। (प्रेरितों 10:34-35; रोमियों 2:11; 3:22; 10:12)! जिसके पास यीशु मसीह है, उसके पास जीवन है, लेकिन जो यीशु मसीह पर विश्वास नहीं करता, वह दोषी (अभिशप्त) ठहर चुका (यूहन्ना 3:18,36; 1यूहन्ना 5:11-13)।

- ''सभी लोगों'' का, परमेश्वर के रूप में एक ही परमेश्वर हो सकता है (रोमियों 3:29-30)।
- ''सभी लोग'' जिन्होंने उद्धार पाया है वे परमेश्वर के केवल एक ही लोग हो सकते हैं (यूहन्ना 10:16; 1कुरिन्थियों 12:13; गलातियों 3:28; इफिसियों 2:11-22; 3:2-6; कुलुस्सियों 3:10-11; प्रकाशितवाक्य 21:9-16)। सभी यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु पर विश्वास करते हैं वे यीशु मसीह के ''भाई'' हैं (मत्ती 12:50; 25:40; इब्रानियों 2:11-12)।

इफिसियों 1:10, फिलिप्पियों 2:10 और कुलुस्सियों 1:20 में ''सभी'' शब्द के स्पष्टीकरण की आवश्यकता है।[2]

चरण 4. लागू करना। **अनुप्रयोग**

विचार करें। इन वचनों में कौन-से सत्य मसीहियों के लिए संभावित अनुप्रयोग हैं?

साझा करें और अभिलेखित करें। आइए हम एक-दूसरे के साथ विचार-मंथन करें और रोमियों 5:12-21 से संभावित अनुप्रयोगों की सूची अभिलेखित करें।

विचार करें। परमेश्वर किस संभावित अनुप्रयोग को चाहता है कि आप उसे एक व्यक्तिगत अनुप्रयोग में बदल दें?

अभिलेखित करें। इस व्यक्तिगत अनुप्रयोग को अपनी स्मरण-पुस्तक में लिख लें। अपने व्यक्तिगत अनुप्रयोग को साझा करने में स्वतंत्रता महसूस करें। (स्मरण रखें कि प्रत्येक समूह के लोग अलग-अलग सत्य लागू करेंगे या एक ही सत्य के अलग-अलग अनुप्रयोग करेंगे। निम्नलिखित संभावित अनुप्रयोगों की एक सूची है।)

(याद रखें: प्रत्येक छोटे समूह में, समूह के सदस्य अलग-अलग चीजें साझा करेंगे)

1. रोमियों 5:12-21 के संभावित लागूकरण के उदाहरण।

5:12. समझें कि परमेश्वर न केवल मेरे बहुत से व्यक्तिगत (व्यक्तिविशेष) *पापमय कार्यों* का लेखा रखते हैं बल्कि आदम के साथ मेरी एकजुटता के कारण मेरी *पापमय स्थिति* (कानूनी स्थिति) और *पापमय स्वभाव* (दशा) का भी लेखा रखते हैं।

5:13-14. समझें कि एक स्वभाविक मनुष्य होने के नाते आदम का पाप मुझे दोषी ठहरने की कानूनी स्थिति (स्थान) में ले आया। आदम के अपराध ने मेरे उद्धार (छुटकारे) को

---

[2]''सभी'' शब्द *सार्वभौमिक उद्धार* के संदर्भ में *सार्वभौमिक मेल* मिलाप नहीं सिखाता। पाप ने संसार और जो कुछ इस में है सब कुछ बर्बाद कर दिया। पाप ने प्राणियों के बीच एक दूसरे के साथ और सृष्टि और सृष्टिकर्ता परमेश्वर के बीच सामंजस्य को बर्बाद कर दिया। सिद्धांत रूप में, मसीह के लहू द्वारा ''पाप'' पर जय पायी गई। व्यवस्था की मांग (परमेश्वर की धार्मिक आवश्यकता) को संतुष्ट किया गया (रोमियों 3:25)। सृष्टि पर श्राप का जन्म् हुआ है (गलातियों 3:13)।

फलस्वरूप, मेल मिलाप पुर्नस्थापित हुआ और शांति स्थापित की गई। मसीह का सम्पूर्ण सृष्टि पर कलीसिया के हित और परमेश्वर की माहिमा के लिए शासन करने के अर्थ में सृष्टि का परमेश्वर के साथ उचित संबंध फिर से पुर्नस्थापित किया गया है। अपने सिद्ध आज्ञाकारिता के पुरस्कार के रूप में, यीशु मसीह को परमेश्वर के दाहिनीं ओर सब लोगों और सब चीजों पर सारी सामर्थ्य और सारे अधिकार के स्थान तक ऊँचा किया गया (मत्ती 28:18)। हालाँकि, जिस तरीके से विभिन्न प्राणी यीशु के अधिकार और शासन के अधीन हैं उसमे अंतर है और इस प्रकार, इस तरीके से उनका ''मेल मिलाप'' परमेश्वर से हुआ है।

एक ओर दुष्ट दूतों और बुरे लोगों को जबरदस्ती, अनिच्छा से अधीन किया जाएगा। उनके मामले में शांति (सामंजस्य) को थोपा गया, लेकिन स्वागत नहीं किया गया। सिंद्धात रूप में उनकी शक्ति छीन ली गई है (कुलुस्सियों 2:15)। उन्हें अधीनता में लाया गया है (1कुरिन्थियों 15:24-28; इफिसियों 1:21-22)। ''शांति का परमेश्वर शैतान को तुम्हारे पाँवों से शीघ्र कुचलवा देगा'' (रोमियों 16:20)। और उनके सभी बुरे काम लगातार भालाई के लिए रद्द किए जा रहे हैं।

दूसरी ओर, अच्छे स्वर्गदूत और मसीह में विश्वासी आनंद, स्वेच्छा और उत्सुकता से अधीन होते हैं! यीशु मसीह का यह अधिकार और सामर्थ्य सीधे नई सृष्टि और नई पथ्वी की ओर ले जाता है जिसमें केवल धार्मिकता वास करती है (2पतरस 3:14; प्रकाशितवाक्य 21:1)।

निश्चित आवश्यकता बना दिय! लेकिन साथ ही यह भी समझें कि मसीह की धार्मिकता (मेरे लिए मेरे स्थान पर अपनी मृत्यु और पुनरूत्थान के द्वारा प्राप्त की) मुझे एक विश्वासी के रूप में कानूनी रूप से धार्मिकता की स्थिति (स्थान) में ले आयी। मसीह की आज्ञाकारिता मेरे उद्धार को निश्चित गारन्टी बनाती है।

5:17–19. निश्चित रूप से आश्वस्त रहें की परमेश्वर का अनुग्रह जो यीशु मसीह के द्वारा आया, मनुष्य के उस पाप पर जयवंत होता है जो आदम के द्वारा आया। निश्चित रूप से आश्वस्त रहें कि परमेश्वर न्याय से अधिक कृपा करने से प्रसन्न होते हैं।

5:20. बाइबल में व्यवस्था (उदाहरण के लिए दस आज्ञाएँ) का प्रयोग करें यह भलि–भाँति समझने के लिए कि ''पाप'' क्या है और यह महसूस करने के लिए कि पापमय लोग अपनी स्वभाविक स्थिति में कैसे हैं।

2. रोमियों 5:12–21 से व्यक्तिगत लागूकरण के उदाहरण।

मैं यह नहीं भूलना चाहता कि परमेश्वर लोगों के साथ केवल *व्यक्तिगत रूप से* ही व्यवहार नहीं करते, बल्कि एक समझ के रूप में उनकी आदम या मसीह के साथ *एकजुटता* के अनुसार भी व्यवहार करते हैं। मैं यह याद रखता चाहता हूँ कि मैं जिस प्रकार जीता हूँ उसका प्रभाव केवल मुझे पर ही नहीं पड़ता, बल्कि दूसरों पर भी पड़ता है और विशेषरूप से मेरे बच्चों पर।

मुझे यह जानकर बड़ा आनंद हुआ की इस संसार पर परमेश्वर के अनुग्रह का भला प्रभाव इस संसार पर बुराई के प्रभाव से कहीं अधिक है! परमेश्वर का अनुग्रह मनुष्य के पाप पर जयवंत होता है। मैं यह याद रखना चाहता हूँ कि मेरे जीवन में परमेश्वर के अनुग्रह का शासन यीशु मसीह पर विश्वास के द्वारा धर्मी ठहरने से और इस संसार में यीशु मसीह के साथ एक नया और धर्मी जीवन जीने के द्वारा व्यक्त किया गया है।

कदम 5. प्रार्थना। **प्रतिउत्तर**

आइये रोमियों 5:12–21 में से परमेश्वर द्वारा सिखाये गये सत्य को लेकर परमेश्वर से प्रार्थना करें। (बाइबल अध्ययन के दौरान जो कुछ आपने सीखा है उसका अपनी प्रार्थना में प्रतिउत्तर दें। केवल एक या दो पक्तियों में प्रार्थना करने का अभ्यास करें। ध्यान रखें कि हर समूह में लोग अलग विषय पर प्रार्थना करेंगे।)

5	**प्रार्थना**(8 मिनट)	***(प्रतिक्रियाएँ)*** **दूसरों के लिए प्रार्थना**

दो या तीन के समूहों में ***प्रार्थना करना जारी रखें।*** एक दूसरे के साथ एक दूसरे के लिए और दुनिया में लोगों के लिए प्रार्थना करें (रोमियों 15:30; कुलुस्सियों 4:12)।

6	**तैयारी**(2 मिनट)	***(सौंपा गया कार्य)*** **अगले अध्याय के लिए**

(***समूह अगुवा।*** समूह के सदस्यों को लिखित रूप में घर पर इसकी तैयारी करने को दें या उन्हें इसकी प्रतिलिपि लेने दें)।

1. समर्पण। चेले बनाने, कलीसिया बनाने और राज्य का प्रचार करने के लिए प्रतिबद्ध हों।
2. किसी अन्य व्यक्ति या लोगों के समूह के साथ मिलकर रोमियों 5:1-11 का प्रचार करें, सिखाएं या अध्ययन करें।
3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय। प्रतिदिन **भजन 31,32,33 व 34** के आधे अध्याय से परमेश्वर के साथ एक शांत समय बिताएँ। पसंदीदा सत्य विधि का उपयोग करें। नोट्स बनाएँ।
4. स्मरण करना। **(8) रोमियों 5:3-4।** पिछले 5 स्मरण किए गए बाइबल पदों की दैनिक समीक्षा करें।
5. शिक्षा देना। लूका 14:8-11ग में निहित **"विवाह के भोज में आरक्षित स्थान"** और लूका **"फरीसी और चुंगी लेने वाला" दृष्टांत** की तैयारी करें। दृष्टांत का अर्थ समझाने के लिए छः निर्देशों का पालन करें।
6. प्रार्थना। इस सप्ताह किसी व्यक्ति या किसी विशेष चीज के लिए प्रार्थना करें और देखें कि परमेश्वर क्या कर रहा है (भजन संहिता 5:3)।
7. प्रचार करने के लिए परमेश्वर का राज्य विषय पर अपनी नोटबुक का अद्यतनीकरण करें। शांत समय के अपने नोट्स, अपने स्मरण किए नोट्स, अपने शिक्षण नोट्स और इस तैयारी को शामिल करें।